International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(3): 95-96

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(3): 95-96
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-03-2023
Accepted: 19-04-2023

डॉ. संजीत कुमार राम
अतिथि सहायक, प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, बी0एम0ए0 कॉलेज, बहेड़ी, ल0ना0मि0वि0वि0, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. संजीत कुमार राम
अतिथि सहायक, प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, बी0एम0ए0 कॉलेज, बहेड़ी, ल0ना0मि0वि0वि0, दरभंगा, बिहार, भारत

महाकवि भास की दृष्टि में भारतीय समाज

डॉ. संजीत कुमार राम

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में महाकवि भास की अपनी विशिष्ट पहचान साहित्य जगत में रही है। उन्हें मानव जीवन के सामाजिक परिवेशों तथा विभिन्न क्षेत्रों को देखने तथा अनुभव कर अपनी रचना में समायोजित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं खासकर नाटकों में विविधता तथा बहुमुखता विशेष रूप से देखने में आता है। कुछ नाटक जैसे– स्वप्नवसवदत्तम प्रतिज्ञानाटकम् आदि पूर्ण नाटक के रूप में विस्तृत है जबकी मध्यमव्यायोग, दूतवाक्य, दूतघटोत्कच, कर्णभार आदि सिर्फ एक अंक के होने के कारण ऐकांकी कहे जाते है।[1]

भासकालीन सामाजिक परिवेश अत्युन्नत था। उस समय तत्कालीन समाज में वर्णाश्रम व्यवस्था सुप्रतिष्ठित हो चुकी थी। ब्राह्मणों का उस समय के समाज में सर्वोच्च स्थान हुआ करते थे। तत्कालीन सामाजिक परिवेश में ये धारणा बन चुकी थी कि ब्राह्मणों की वाणी कभी असत्य नहीं होती और वे भी असत्य बोलने का प्रयास नहीं करते थे। समाज के अन्य वर्गों के लोग भी ब्राह्मणों के लिए सदा समर्पित रहा करते थे। ब्राह्मण सभी अपराधों में अवध्य माना जाता था–

मच्छरीरेण ब्राह्मण शरीरं विनिमातुमिच्छामि।[2]

जातक कथाओं की तरह भास के नाटकों में भी ब्रह्मण और क्षत्रियों के बीच वैभनस्य का संकेत कहीं भी देखने को मिल जाता है। तत्कालीन समाज में सभी वर्गों में सामञ्जस्य की भावना निहित रहती थी ।

तत्कालीन समाज में स्त्रियों के प्रति सहिष्णुता तथा समादर की भावना नीहित थी। घर में बेटी के जन्म लेने पर ससम्मान आनन्द मनाया जाता था। उस समय विभिन्न उत्सवों पर लोग एक दूसरे के साथ आपस में मिलने तथा आमोद–प्रमोद किया करते थे। प्रेम के विभिन्न रूपों में महाकवि भास समवयस्कों के मैत्री को श्रेष्ठ मानते थे। मित्र के संबंध में उन्होंने लिखा है–

गोष्ठीषु ह्वासः समरेषु योद्यः,
शोके गुरूः साहसिकः परेषु।
हृदि किं प्रलापैर्द्विधा
विभक्तं खलु में शरीरम्।[3]

आदर्श मैत्री की भावना बहुत दिनों तक टिकाऊ होते थे तथा मित्र को देखकर वह और भी सम्वहित होती है। इसीलिए उनकी इन रचनाओं म कुन्तीभोज सौवीरराज को देखकर कहते है– स्नेहान्नवी कृत इवाछवयस्य भावः।[4] उनकी दृष्टि में प्रेम सर्वव्यापक तत्त्व है, इसीलिए काशिराज की महिषी अविमारक को देखकर भी स्नेहाकुल हो जाती है। आदर्श प्रेम–प्रिय के वियोग में घटने के बजाय बढ़ता है। भास के आदर्श प्रेमी उदयन का कथन है–

दुखत्यक्तुं बद्धमूलोऽनुरागः स्मृत्वा–स्मृत्वायाति दुखं न वत्वम्।[5] भास की मान्यता है कि मानव को प्रत्येक स्थिति में कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए। वे ब्राह्मणों को शम, दम, इन्द्रियजन्य तथा शास्त्रज्ञान से समन्वित देखना चाहते थे। क्षत्रियों को वे पौरुष और पराक्रम से समन्वित देखना चाहते थे। क्षत्रियों को वे पोरूष और पराक्रम से सम्पन्न बनाना चाहते थें।

महाकवि भास जीवन में उत्साह; कर्मठता तथा साहस को सर्वश्रेष्ठ गुण मानते हुए यौगन्धरायण, अविमारक एवं राम सदृश चरित्रों के उपस्थान में स्पष्ट करते है–

काष्ठादग्निर्जायते मध्यमानाद् भूमिस्तोयं खन्यमाना ददाति।
सोत्साहानां जास्त्यसाध्यम् नराणां मार्गारब्धासर्वयत्नाफलन्ति।।[6]

वे ब्राह्मणों को शम–दम, इन्द्रियजय तथा शास्त्रज्ञान से समन्वित देखना चाहते थे। अविमारक के चरित्र द्वारा भास ने पौरुष तथा शौर्य का आदर्श उपस्थित किया है। अपनी वाल्यावस्थाओं में ही धूमकेतु नामक राक्षस को अपने पराक्रम से मार डालता है। अभिषेक के राम, मध्यमव्यायोग के भीम, बालचरित के कृष्ण, दूतघटोत्कच के घटोत्कर वे सभी शौर्य के मूर्तिमान रूप में हैं –

दष्टोष्टौ मुष्टिमुद्यम्य तिष्ठत्येष घटोत्कचः।
उत्तिष्टु पुमान् कश्चित गन्तुमिच्छेद यमालयन।

महाकवि भास को धर्म के प्रति दृढ़ आस्था थी। उनके विचार में धर्म जीवन में महत्त्व पूर्ण होता है। धर्म परायण पुरुष की मृत्यु पाश्चात्ताप कारक नहीं होती। समय की प्रवृत्तियों के अनुरूप में वैष्णवमत के अनन्य भक्त थे। मध्यमव्यायोग, दूतवाक्य, दूतघटोत्कच, कर्णभार, अविमारक आदि के नान्दी पाठों में उनकी श्रद्धा विष्णु के प्रति हुई है। उनके प्रति समर्पित होते हुए वे कह उठते है–

यथा नदीनां प्रभवः समुद्रो यथा हुतीनां प्रभवो हुताशनः।
यथेन्द्रियाणां प्रभवंमनोऽपि तथा प्रभुर्नो भगवानुपेन्दः।।[7]

वर्णाश्रम धर्म के प्रति भी उनका दृढ़ विश्वास भी। यज्ञ, तपोवल, ज्योतिष, याक्षिणी, अवतारवाद तथा विद्याधर सिद्धादि और उनकी दिव्य शक्तियों में उनका पूर्ण विश्वास था। पतिव्रताओं के तेज तथा प्रभाव में उनका प्रवल विश्वास था। सीता के तेज को स्पष्टीकरण करते हुए रावण कहता है–

योऽहमुत्पतितो वेगान्न दग्धः सूर्यरश्मिभिः।
अस्याः परिमितैर्दग्धः शप्तोऽसीतयेऽभिरक्षरैः।[8]

पितरों के श्राद्धतर्पण आदि को वे धार्मिक दृष्टि से अपना कर्त्तव्य मानते थे। महाकवि भास कलात्मक तथा सुसंस्कृत अभिरूचि से सम्पन्न थे। इसके अतिरिक्त नृत्य और संगीत से भी अधिक लगाव था। बालचरित में कृष्ण गोपों और गोपांगनाओं के सामूहिक नृत्य को रंगमंच पर प्रस्तुत करने में वे काफी रूचि रखते थे। बाद्यों में उन्हें वीणा से अत्यधिक लगाव था तथा पशुओं में हाथी उनका प्रिय पशु था –

उत्कण्ठितस्य हृदयानुगता सखीवसंकीर्णदोष रहिता विषयेषुगोष्ठी।
क्रीड़ा रसेषु मदनव्यसनेषु कान्ता, स्त्रीणां तु कान्तरति विघ्नकरी सम्पत्नी।[9]

वे स्नेही, मृदुल और वात्सन्य प्रकृति के व्यक्ति थे। पंचराग में कवि ने अभिमन्यु को अपने हृदय की वात्सल्यधारा से स्नान कराया हैं अभिमन्यु की सरलता तथा बालोचित चेष्टाओं के चित्रण में भी कवि का मन उतना ही रमा है जितना उनके शौर्य और पराक्रम के चित्रण में । उरूभंग में मरणासन्न दुर्योधन के हृदय को कवि के दर्शन से स्नेहासिक्त कर दिया है। भास की वात्सल्य प्रवण कोमल मनोवृत्ति का इससे बढ़कर और क्या प्रमाण हो सकता है कि उनका हृदय ब्राह्मणों की हिंसा के लिए उद्यत घटोत्कच के लिए भी उदारस्नेह से आपूरित है। प्रसन्नमन रहते हुए महाकवि जीवन के प्रति गंभीर दृष्टि रखा करते है। अपने जीवन क्रम में उन्होंने अनेक उतार चढ़ावों का अनुभव था जो बाद में उन्हें भाग्यवादी बना दिया। मानव को जीवन में अनेक आघातों तथा विभिन्न तरह का विपदाओं का सामना करना पड़ता है। उन्होंने महसूस किया है कि जीवन में मनुष्य को प्रत्येक पग पर संघर्ष करना पड़ता है। विभिन्न तरह की कठिनाईयों से जूझना पड़ता है। वे मानव समाज को उत्साह और कर्मठता द्वारा आयी हुए समस्याओं का सामना करने की सलाह देते हुए कहते हैं –

कालक्रमेण जगतः परिवर्त्तमाना चक्रारपंवित्तरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः।[10]

महाकवि भास यद्यपि राज्य सभा के कवि थे, लेकिन उन्होंने समाज के उच्चतम वर्ग से लेकर निम्नवर्ग के लोगों के जीवन और प्रवृत्तियों का काफी निकट से अध्ययन किया था। उन्होंने समसामयिक समाज के साथ प्रकृति का भी सूक्ष्म पर्यवेक्षण किया था। स्वप्नवासवदत्तम् के प्रथम अंक में कवि ने तपोवन के वातावरण और प्राकृतिक दृश्य को शब्दों द्वारा प्रत्यक्ष एवं साकार बना दिया था। जो उसकी असामान्य पर्यवेक्षण शक्ति का प्रमाण है।[11] महाकवि में पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा व्यावहारिक ज्ञान संस्कृत से अलग कवियों की तुलना में ज्यादा है। स्त्रियों के साथ किस तरह का व्यवहार करना चाहिए, तथा किस प्रकार का सदाचार प्रयोग में लाया जाय इसका पर्याप्त निदर्शन भास की रचनाओं में हमें प्राप्त होते हैं। यद्यपि भास से पूर्व ही नाट्यसाहित्य का विकास हो चुका था, पर संस्कृत नाटक को अपनी प्रखर प्रतिभा से एक नया आयाम देने का काम महाकवि भास ने किया था ।

संदर्भ

1. आचार्य बलदेव उपाध्याय–संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा संस्थान, यू.पी.–पृ0 62
2. भास– मध्यमव्यायोग में भीम का कथन।
3. भास – अविमारक– 4/21
4. उपर्युक्त – 6/1
5. भास – स्वप्नवासवदत्तम्– 4/6
6. भास– प्रतिज्ञा यौगन्धरायण – 1/18
7. उपर्युक्त– दूतघरोत्कच – 50
8. उपर्युक्त – मध्यमव्यायोग– 1/52
9. भास– प्रतिमानाटक– 6/20
10. प्रतिज्ञा यौगन्धरायण – 3/12
11. भास–स्वप्नवासवदत्तम्– 1/4
12. उपर्युक्त– 1/12, 16